प्रश्न हमारे उत्तर श्री अशोक 'मानव' जी के

प्र०:-	यदि व्यक्ति को अल्पायु से बचना है, दीर्घायु बनाना है उसके लिये क्या करना चाहिये ?
उ०:-	अगर आपको पता चल जाता है तो अपना जीवन अच्छे काम करके बढ़ा सकते है। आप लोगों की मद्द करके बढ़ा सकते हैं। आप अपने को इतना महत्वपूर्ण कर देगी। प्रकृति ही तो सब कुछ कर रही है मिल तो आपको अंश वहीं से रहा है । यदि वहाँ से मजबूत हो गया तो विरोधी तत्व कुछ नहीं कर पायेगा हर व्यक्ति के सहयोगी चक्र के साथ–साथ विरोधी तत्व की ऊर्जा भी रहती है । हर व्यक्ति के जीवन में एक सहयोगी तत्व की ऊर्जा रहती है जो सीधें–सीधे चलती है और एक विरोधी तत्व की ऊर्जा भी रहती है जो उसके बराबर मे चलती है। जैसे– कोई पट्टीदार हो, कोई दोस्त दुश्मन बन जाय या दुश्मन हो , ये ब्रेकेज है जो उसके विरोधी तत्व की ऊर्जा है।वह भी साथ–साथ ही चल रही है । वह भी हमेशा ही निशाना बनाये है । कब आपका कमजोर अंश पाये वहीं अटैक कर दे। जिस व्यक्ति के सारे ग्रह सर्पोट कर रहे हों। उनका कोई कुछ नही बिगाड़ पाता । लोग दुश्मनों को खत्म करने के लिये तन्त्र–मन्त्र का भी प्रयोग करते है। अपने दुश्मनों को खत्म करने के लिये तमाम चीजों का प्रयोग करते है लेकिन जिस व्यक्ति के लिये प्रयोग किया जाता है। जब उसके स्टार मजबूत हैं उसका चक्र मजबूती से बना है। जिस रास्ते पर वह चल रहा है लाख क्रिया की जाती रहे उसको शारीरिक पीड़ा तो पहुँचा लेगें लेकिन उसका अंश नहीं खत्म कर पायेगें।
प्र०:-	गुरू जी चक्र मजबूत रहे इसके लिये क्या करें ?
उ०:-	चक्र मजबूत रहे उसके लिये इच्छाशक्ति मजबूत रहे । सबसे बड़ा चक्र मजबूती का एक ही कारण है आपकी अगर इच्छाशक्ति कमजोर नही है तो आपकी इच्छाशक्ति से निकलने वाली ऊर्जा उस कमजोर अंश मे एयर भर देगी और एयर जब भर जाती है एयर टाइट हो जाता है। उसका भी भेदन कोई नहीं कर पाता है । उस रास्ते पर आप आते है जहाँ आपका अंश कमजोर है । अगर आपकी इच्छाशक्ति मजबूत है आपकी इच्छाशक्ति से ऐसा एयर बनकर निकलेगा उसको ब्लाक (लॉक) कर देगा। प्रकृति नहीं रिर्पोट करेगी लेकिन उसकी इच्छाशक्ति उसको रिर्पोट कर देगी। वहाँ से ऊर्जा निकलेगी । वह एयर टाइट बनकर विरोधी तत्व की ऊर्जा अन्दर नहीं आयेगी। तब तक वह रूट्स पर घूमता रहेगा मरेगा नही सर्पोट की ऊर्जा उसको चलाती रहेगी। बुजुर्गों ने कहा है – "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत" बहुत बड़ी फिलोसफी है, बहुत बड़ा विज्ञान इसमें छिपा हुआ है।
प्र०:-	गुरू के प्रति हम लोगों के क्या–क्या कर्तव्य होने चाहिए?
उ०:-	पहले तो हमे गुरू बहुत सोच समझ के बनाना चाहिए। लेकिन जब गुरू बना लें तो गुरू के प्रति पुर्ण समर्पण का भाव होना चाहिए। और गुरू के प्रति अच्छे भाव होने चाहिए कपट नहीं होना चाहिए प्रकृति में गुणों का सागर और अवगुणों का समुद्र है। यह व्यक्ति के ऊपर निर्भर करता है कि कितना ले सकता है। किसी के पास ग्लास है किसी के पास लोटा है किसी के पास टंकी है। जितना बड़ा आपका पात्र है उतना ही तो भरेगा प्रकृति में गुणों का भण्डार है। यह आप पर निर्भर करता है कि आप क्या लेना चाहते है। जो राक्षस बनकर आता है। जो अच्छे भाव से उनके गुणों को धारण करके उनसे मिलता है वह उसी रूप मे मिलता है। शिष्य को जागरूक होना चाहिए कि क्या चाहिए। अगर आप सच्चे मन से पूरी निष्ठा, विश्वास से आदर भाव से गुरू को मानते है तो जो गुरू छिपाना भी चाहता है वह भी शिष्य पा जायेगा सच्चा गुरू तो कुछ छिपाता ही नहीं। भक्त को गुरू के प्रति हमेशा सकारात्मक विचार ही रखना चाहियें। कभी भी गुरु के प्रति नकारात्मक विचार न लाये। गुरू मार के डांट के भगा रहा हो फिर भी लगा रहे। गुरू की बुराई को न देखे और गुरू के प्रति हमेशा प्रेम का ही भाव छोडें। **हम तभी अधूरे होते है जब हमारे अन्दर डर भी होता है।**